IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19767554

ISSN : 3048-6971

स्वामी विवेकानंद और नारी : दृष्टि, दर्शन और समकालीन प्रासंगिकता

निरुपमा कुमारी
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग
जय प्रकाश विश्वविध्यालय, छपरा, बिहार
डॉ. रिंकी कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
जय प्रकाश महिला महाविधलाया, छपरा, बिहार

सारांश:

स्वामी विवेकानंद का नारी-विषयक चिंतन उनके व्यापक मानवतावादी और वेदांतपरक दर्शन का अभिन्न अंग है। उनकी दृष्टि में नारी केवल समाज की एक इकाई नहीं, बल्कि संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्र-निर्माण की मूल शक्ति है। उनका विश्वास था कि शिक्षित नारी न केवल अपने जीवन को दिशा देती है, बल्कि परिवार और राष्ट्र के भविष्य का भी निर्माण करती है। वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो स्त्री को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और चरित्रवान बनाए। यह दृष्टि आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है, जब महिला शिक्षा के साथ-साथ गुणवत्ता, समान अवसर और सुरक्षा जैसे प्रश्न भी जुड़े हुए हैं। समकालीन संदर्भ में विवेकानंद के नारी-विचार विशेष महत्व रखते हैं। आज जब लैंगिक असमानता, स्त्री-हिंसा और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याएँ वैश्विक स्तर पर चर्चा का विषय हैं, विवेकानंद का नारी-दर्शन समानता, सम्मान और सहयोग का संतुलित मार्ग प्रस्तुत करता है। उनका नारीवाद संघर्ष या टकराव पर नहीं, बल्कि समरसता और पूरकता पर आधारित है, जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों समाज के समान सहभागी हैं। इस शोध विषय में हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि स्वामी विवेकानंद की नारी-दृष्टि, उनका दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता आज भी समाज को दिशा देने में सक्षम है। नारी का उत्थान उनके लिए केवल सामाजिक सुधार नहीं, बल्कि राष्ट्र और मानवता के उत्थान की अनिवार्य शर्त है। यही कारण है कि उनका नारी-विचार आज भी प्रासंगिक, प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक बना हुआ है।

शोध शब्द : नारी शक्ति, समानता, मानसिक पतन, शिक्षा और स्वतंत्रता, मानवता के उत्थान, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण।

भूमिका

भारतीय सामाजिक-दार्शनिक परंपरा में नारी का स्थान सदा से बहुआयामी और जटिल रहा है। एक ओर उसे शक्ति, करुणा और सृजन की मूर्ति के रूप में पूजा गया, तो दूसरी ओर सामाजिक रूढ़ियों, अशिक्षा और पितृसत्तात्मक संरचनाओं ने उसके विकास को बाधित किया। वे स्त्री और पुरुष के बीच किसी भी प्रकार की आत्मिक या बौद्धिक असमानता को स्वीकार नहीं करते। भारतीय परंपरा में नारी की गौरवशाली स्थिति—गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषी महिलाओं—का उल्लेख करते हुए वे सिद्ध करते हैं कि नारी की उपेक्षा भारतीय संस्कृति की मूल प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक विकृतियों का परिणाम है। इस प्रकार वे नारी की गरिमा को सांस्कृतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं। नारी-शिक्षा को विवेकानंद समाज-निर्माण का मूल आधार मानते हैं। विवेकानंद के अनुसार आत्मा न तो स्त्री है और न पुरुष, बल्कि शुद्ध चेतना है; इसलिए नारी को हीन या दुर्बल मानना सामाजिक अज्ञान और मानसिक पतन का परिणाम है। विवेकानंद का दर्शन नारी को 'शक्ति' का सजीव स्वरूप मानता है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि जिस समाज में नारी का सम्मान नहीं होता, वहाँ शक्ति-पूजा केवल बाहरी आडंबर बनकर रह जाती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब भारत औपनिवेशिक दासता, सामाजिक कुरीतियों और आत्मविश्वास के संकट से जूझ रहा था, तब स्वामी विवेकानंद ने नारी के उत्थान को राष्ट्रीय पुनर्जागरण का केंद्रीय प्रश्न बनाया। उनके चिंतन में नारी केवल सुधार का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा और शक्ति का स्रोत है। स्वामी विवेकानंद का नारी-दर्शन वेदांत की उस व्यापक मान्यता से उपजा है जिसमें आत्मा का कोई लिंग नहीं होता। उनके अनुसार आत्मा न तो पुरुष है, न स्त्री—वह शुद्ध चेतना है। इसी आधार पर वे नारी-पुरुष समानता की बात करते हैं। विवेकानंद ने स्पष्ट कहा कि जिस समाज में नारी को दबाया जाता है, वह समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता। नारी का अपमान केवल नैतिक पतन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय दुर्बलता का कारण है।

विवेकानंद का चिंतन और नारी प्रश्न

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के उन महान विचारकों में अग्रणी हैं, जिनका चिंतन आध्यात्मिक गहराई के साथ-साथ सामाजिक यथार्थ से भी गहराई से जुड़ा हुआ था। वे केवल संन्यासी या दार्शनिक नहीं थे, बल्कि समाज-सुधारक, राष्ट्र-निर्माता और मानवतावादी चिंतक थे। उनके समग्र दर्शन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण है। विवेकानंद के लिए नारी केवल सामाजिक संरचना की एक इकाई नहीं थी, बल्कि वह संस्कृति, नैतिकता, संवेदना और शक्ति की जीवंत प्रतीक थी। वर्तमान समय में, जब लैंगिक असमानता, नारी-सुरक्षा, शिक्षा और अधिकार जैसे प्रश्न वैश्विक विमर्श के केंद्र में हैं, विवेकानंद के नारी-विचार अत्यंत समकालीन और मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। विवेकानंद यह मानते थे कि समाज का वास्तविक विकास तब तक संभव नहीं है, जब तक नारी को समान सम्मान, शिक्षा और स्वतंत्रता प्राप्त न हो। उनका प्रसिद्ध कथन कि "जिस देश में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता, वहाँ कभी कोई बड़ा कार्य नहीं हुआ," आज भी उतना ही प्रासंगिक है। यह कथन न केवल नैतिक अपील है, बल्कि सामाजिक विकास का एक मौलिक सिद्धांत भी है। वर्तमान संदर्भ में विवेकानंद का नारी-दर्शन हमें यह सोचने के लिए बाध्य करता है कि क्या आधुनिकता के बावजूद हम वास्तव में नारी को उसका उचित स्थान दे पाए हैं।

आत्मिक समानता और लैंगिक भेद का निषेध

स्वामी विवेकानंद के नारी-विचारों का दार्शनिक आधार आत्मा की समानता के सिद्धांत में निहित है। वे वेदांत दर्शन के आधार पर यह स्पष्ट करते हैं कि आत्मा न तो स्त्री है और न पुरुष। आत्मा शुद्ध, निर्लिप्त और सर्वव्यापी है। इस दृष्टि से स्त्री और पुरुष के बीच किया गया कोई भी भेद कृत्रिम और सामाजिक है, न कि प्राकृतिक या आध्यात्मिक। विवेकानंद के अनुसार स्त्री को कमजोर या हीन मानना स्वयं मानवता के प्रति अन्याय है। वर्तमान संदर्भ में यह विचार इसलिए अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि आज भी अनेक समाजों में जैविक भिन्नताओं के आधार पर स्त्रियों की क्षमता पर प्रश्नचिह्न लगाए जाते हैं। कार्यस्थल, राजनीति और निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं में स्त्रियों की भागीदारी को सीमित करने वाली मानसिकता अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। विवेकानंद का आत्मिक समानता का सिद्धांत आधुनिक संविधानिक समानता और मानवाधिकार की अवधारणा को दार्शनिक मजबूती प्रदान करता है। (विवेकानंद साहित्य, खंड–5)

भारतीय परंपरा में नारी और विवेकानंद की व्याख्या

स्वामी विवेकानंद नारी की गरिमा को स्थापित करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का सहारा लेते हैं। वे यह स्पष्ट करते हैं कि नारी की उपेक्षा भारतीय संस्कृति की मूल प्रवृत्ति नहीं है। वैदिक और उपनिषदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा और अपाला जैसी विदुषी नारियाँ दर्शन और ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी थीं। विवेकानंद के अनुसार बाद के ऐतिहासिक कालखंडों में सामाजिक असुरक्षा, विदेशी आक्रमणों और रूढ़िवादी सोच के कारण नारी की स्थिति में गिरावट आई। वर्तमान भारत में जब परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन की आवश्यकता महसूस की जा रही है, विवेकानंद का यह दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी है। वे न तो अतीत का अंध-गौरव करते हैं और न ही आधुनिकता का

अंध-अनुकरण। उनका आग्रह है कि भारतीय समाज अपनी मूल सांस्कृतिक चेतना को पहचानते हुए नारी को फिर से सम्मान और स्वतंत्रता प्रदान करे। (Das, Vivekananda and Indian Culture)

नारी-शिक्षा : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विवेकानंद

नारी-शिक्षा विवेकानंद के सामाजिक दर्शन का केंद्रीय तत्व है। वे मानते थे कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा नारी अपने आत्मबल, अधिकार और कर्तव्यों को पहचान सकती है। उनका कथन—"स्त्रियों को शिक्षित करो, वे स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान कर लेंगी"—आज भी नारी-सशक्तिकरण की सबसे सशक्त अवधारणा मानी जाती है। विवेकानंद केवल औपचारिक शिक्षा के पक्षधर नहीं थे, बल्कि ऐसी शिक्षा चाहते थे जो चरित्र, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का विकास करे। वर्तमान समय में भारत सहित अनेक विकासशील देशों में महिला साक्षरता में वृद्धि हुई है, किंतु ड्रॉपआउट, डिजिटल डिवाइड, असमान अवसर और सुरक्षा की समस्याएँ अब भी बनी हुई हैं। ऐसे में विवेकानंद की शिक्षा-दृष्टि केवल आंकड़ों तक सीमित न रहकर गुणवत्तापूर्ण और मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल देती है। (The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol. 7)

नारी और शक्ति की अवधारणा : आधुनिक संदर्भ

विवेकानंद के चिंतन में 'शक्ति' की अवधारणा नारी-विमर्श का आधार है। वे नारी को शक्ति का साक्षात् स्वरूप मानते हैं। उनके अनुसार शक्ति-पूजा का वास्तविक अर्थ तभी है जब समाज में नारी का सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित हो। केवल देवी-पूजा और धार्मिक अनुष्ठान नारी-सम्मान का प्रमाण नहीं हो सकते। वर्तमान संदर्भ में, जब एक ओर धार्मिक आडंबर दिखाई देते हैं और दूसरी ओर स्त्री-हिंसा, घरेलू हिंसा और कार्यस्थल पर उत्पीड़न की घटनाएँ सामने आती हैं, विवेकानंद का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। यह हमें यह सोचने के लिए बाध्य करता है कि क्या हमारा समाज वास्तविक अर्थों में शक्ति का सम्मान कर रहा है। (विवेकानंद साहित्य, खंड–4)

सामाजिक कुरीतियाँ और नारी-सशक्तिकरण

स्वामी विवेकानंद बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, विधवा-दुर्दशा और स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि नारी की मुक्ति सहानुभूति या दान से नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान से होगी। वे स्त्री को दया की पात्र नहीं, बल्कि अधिकार-संपन्न नागरिक के रूप में देखते थे। वर्तमान समय में सरकारें और संस्थाएँ नारी-कल्याण की अनेक योजनाएँ चला रही हैं, किंतु विवेकानंद की दृष्टि हमें यह सिखाती है कि योजनाओं की सफलता तब ही संभव है जब स्त्रियाँ स्वयं निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में सहभागी हों। (शर्मा, स्वामी विवेकानंद और नारी जागरण)

पुरुषों की भूमिका और मानसिक परिवर्तन

विवेकानंद यह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि नारी-उत्थान केवल स्त्रियों का प्रश्न नहीं है। यह पुरुषों की मानसिकता में परिवर्तन का भी प्रश्न है। जब तक पुरुष स्त्री को बराबरी का दर्जा नहीं देगा, तब तक सामाजिक समानता अधूरी रहेगी। वे पुरुष-प्रधान सोच की तीखी आलोचना करते हैं।

आज के समय में लैंगिक समानता की चर्चा में पुरुष सहभागिता की जो आवश्यकता महसूस की जा रही है, वह विवेकानंद के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को सिद्ध करती है। (विवेकानंद साहित्य, खंड–5)

राष्ट्र-निर्माण में नारी की भूमिका

स्वामी विवेकानंद मानते थे कि कोई भी राष्ट्र तब तक सशक्त नहीं बन सकता, जब तक उसकी आधी आबादी अशिक्षित और उपेक्षित बनी रहे। उनके अनुसार नारी में त्याग, संगठन और नैतिकता की अद्वितीय शक्ति है। वर्तमान समय में जब महिलाएँ राजनीति, प्रशासन, विज्ञान, तकनीक और रक्षा जैसे क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं,

विवेकानंद का यह विचार व्यवहार में साकार होता दिखाई देता है। (Chaturvedi, Bharatiya Samaj Sudhar Andolan aur Vivekananda)

विवेकानंद और समकालीन नारीवाद

विवेकानंद का नारी-दर्शन आधुनिक नारीवाद से भिन्न होते हुए भी उसे संतुलन प्रदान करता है। उनका दृष्टिकोण संघर्ष नहीं, बल्कि समरसता पर आधारित है। वे स्त्री और पुरुष को पूरक मानते हैं। वर्तमान समय में, जब नारी-विमर्श कई बार वैचारिक टकराव का रूप ले लेता है, विवेकानंद का संतुलित दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है। (Sen, Development as Freedom) विवेकानंद प्राचीन भारतीय संस्कृति की उस परंपरा की ओर संकेत करते हैं जहाँ नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। वैदिक काल की गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषी स्त्रियाँ इसका प्रमाण हैं। उनके अनुसार भारत की अवनति का एक बड़ा कारण नारी की उपेक्षा है। जब नारी शिक्षित, स्वावलंबी और आत्मविश्वासी थी, तब समाज सशक्त था; और जब उसे घर की चारदीवारी में सीमित कर दिया गया, तब सामाजिक जड़ता बढ़ी। नारी शिक्षा विवेकानंद के चिंतन का केंद्रीय तत्व है। वे मानते थे कि किसी भी समाज की उन्नति उसकी माताओं की शिक्षा पर निर्भर करती है।

नारी और स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के उन महान चिंतकों में से हैं जिनके विचारों ने न केवल भारतीय समाज को नई दिशा दी, बल्कि मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों को भी सुदृढ़ किया। उनके चिंतन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक पक्ष नारी की स्थिति, भूमिका और गरिमा से संबंधित है। विवेकानंद ने नारी को किसी एक वर्ग, जाति या भूमिका तक सीमित न मानकर उसे समाज, संस्कृति और राष्ट्र की आत्मा के रूप में देखा। उनके अनुसार किसी भी समाज की प्रगति का वास्तविक मानदंड यह है कि वहाँ स्त्रियों को कितना सम्मान, शिक्षा और स्वतंत्रता प्राप्त है। यही कारण है कि उनके विचारों में नारी-विमर्श केवल सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण से गहराई से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। स्वामी विवेकानंद यह मानते थे कि स्त्री और पुरुष में किसी प्रकार की आत्मिक या बौद्धिक हीनता नहीं है। उनके अनुसार आत्मा न तो पुरुष है और न ही स्त्री; आत्मा शुद्ध चेतना है। समाज द्वारा निर्मित कृत्रिम भेदभाव ने नारी को कमजोर बना दिया है, जबकि वास्तविकता यह है कि नारी में अपार शक्ति, सहनशीलता और रचनात्मक क्षमता निहित है। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि जिस समाज ने नारी को दबाया है, उसी समाज ने स्वयं अपनी उन्नति के द्वार बंद कर लिए हैं। इस प्रकार विवेकानंद का नारी-दृष्टिकोण मूलतः समानता, गरिमा और न्याय पर आधारित है। भारतीय परंपरा के संदर्भ में विवेकानंद नारी की उच्च स्थिति को रेखांकित करते हैं। वे बार-बार वैदिक और उपनिषदिक काल की उन नारियों का उल्लेख करते हैं जिन्होंने दर्शन, ज्ञान और अध्यात्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि प्राचीन भारत में नारी को बौद्धिक स्वतंत्रता और सम्मान प्राप्त था। विवेकानंद के अनुसार बाद के ऐतिहासिक काल में विदेशी आक्रमणों, सामाजिक असुरक्षा और रूढ़िवादी मानसिकता ने नारी को घर की चारदीवारी में बंद कर दिया, जिससे उसकी स्वाभाविक विकास-क्षमता कुंठित हो गई। वे इस पतन के लिए भारतीय संस्कृति को नहीं, बल्कि उसके विकृत सामाजिक ढाँचों को उत्तरदायी ठहराते हैं।

नारी-शिक्षा विवेकानंद के चिंतन का केंद्रीय बिंदु है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा नारी अपने आत्मबल और अधिकारों को पहचान सकती है। वे केवल औपचारिक या पुस्तकीय शिक्षा के पक्षधर नहीं थे, बल्कि ऐसी शिक्षा चाहते थे जो स्त्री को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और चरित्रवान बनाए। विवेकानंद का कथन—"स्त्रियों को शिक्षित करो, वे स्वयं अपने लिए मार्ग बना लेंगी"—आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। उनके अनुसार नारी की शिक्षा का लाभ केवल उसे ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को मिलता है,

क्योंकि शिक्षित माँ ही सुसंस्कृत और जागरूक पीढ़ी का निर्माण कर सकती है। स्वामी विवेकानंद नारी को करुणा और सहनशीलता की मूर्ति मानते थे, परंतु वे उसे दुर्बल मानने की धारणा का कड़ा विरोध करते थे। उनका कहना था कि नारी को कमजोर बताना स्वयं प्रकृति का अपमान है, क्योंकि वही जीवन को जन्म देती है और उसका पोषण करती है। वे नारी को 'शक्ति' का प्रत्यक्ष रूप मानते थे। भारतीय दर्शन में शक्ति की अवधारणा को वे अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं और कहते हैं कि जब तक समाज में नारी का सम्मान नहीं होगा, तब तक शक्ति-पूजा केवल एक बाहरी आडंबर बनकर रह जाएगी। इस प्रकार विवेकानंद के लिए नारी का सम्मान धार्मिक, नैतिक और सामाजिक—तीनों स्तरों पर अनिवार्य है।

समाज-सुधार के संदर्भ में विवेकानंद के विचार अत्यंत व्यावहारिक और प्रगतिशील थे। वे बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा और स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता जैसी कुप्रथाओं के विरोधी थे। उनका मानना था कि नारी की वास्तविक मुक्ति दया या सहानुभूति से नहीं, बल्कि अधिकार, शिक्षा और अवसर से होगी। वे यह भी कहते थे कि नारी-सुधार का अर्थ पश्चिमी जीवन-शैली का अंधानुकरण नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के भीतर रहकर स्त्री को स्वतंत्र और सशक्त बनाना है। इस दृष्टि से उनका नारी-विमर्श संतुलित और मौलिक कहा जा सकता है। विवेकानंद पुरुषों की भूमिका को भी नारी-सशक्तिकरण के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। उनके अनुसार जब तक पुरुष अपनी मानसिकता में परिवर्तन नहीं लाएगा, तब तक नारी की स्थिति में वास्तविक सुधार संभव नहीं है। वे पुरुषों से आह्वान करते थे कि वे स्त्री को बराबरी का स्थान दें और उसे अपनी सहचरी के रूप में स्वीकार करें, न कि अपनी संपत्ति या आश्रित के रूप में। यह दृष्टिकोण उस समय के समाज के लिए अत्यंत क्रांतिकारी था, जब स्त्रियों को निर्णय-प्रक्रिया से लगभग पूरी तरह बाहर रखा गया था।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में नारी की भूमिका पर विवेकानंद का चिंतन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे मानते थे कि कोई भी राष्ट्र तब तक सशक्त नहीं बन सकता, जब तक उसकी आधी आबादी अशिक्षित और उपेक्षित बनी रहे। उनके अनुसार नारी में नैतिकता, त्याग और संगठन की जो शक्ति है, वह राष्ट्र-निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। वे यह भी कहते थे कि भारत की आध्यात्मिक चेतना को जीवित रखने में नारी की भूमिका पुरुष से कहीं अधिक रही है। इस प्रकार विवेकानंद नारी को केवल सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि राष्ट्र की नैतिक आत्मा मानते हैं। स्वामी विवेकानंद का नारी-विचार आधुनिक नारीवाद से कई अर्थों में भिन्न है। उनका नारीवाद संघर्ष और टकराव पर आधारित नहीं, बल्कि सहयोग, संतुलन और समरसता पर आधारित है। वे स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे का विरोधी नहीं, बल्कि पूरक मानते हैं। उनके अनुसार समाज की पूर्णता तभी संभव है जब दोनों समान गरिमा और सम्मान के साथ अपने-अपने गुणों का विकास करें। यह दृष्टिकोण आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जब लिंग-आधारित संघर्ष सामाजिक तनाव का कारण बनता जा रहा है।

विवेकानंद के विचारों का प्रभाव भारतीय समाज और स्वतंत्रता आंदोलन पर भी देखा जा सकता है। उनके प्रेरणास्रोत से अनेक समाज-सुधारकों और महिला कार्यकर्ताओं ने नारी-शिक्षा और अधिकारों के लिए कार्य किया। आधुनिक भारत में महिला शिक्षा, महिला अधिकार और महिला नेतृत्व की जो चेतना दिखाई देती है, उसके वैचारिक स्रोतों में विवेकानंद का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने नारी को आत्मगौरव और आत्मविश्वास के साथ खड़े होने की प्रेरणा दी, जो किसी भी सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में विवेकानंद का नारी-विमर्श और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। आज जबकि महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, प्रशासन और विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर हिंसा, भेदभाव और असमानता की समस्याएँ भी बनी हुई हैं। ऐसे में विवेकानंद का यह संदेश कि नारी को सम्मान देना केवल सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि मानवता की आवश्यकता है, हमें आत्ममंथन के लिए

प्रेरित करता है। उनके विचार आज भी नीति-निर्माण, शिक्षा-व्यवस्था और सामाजिक चेतना को दिशा देने में सक्षम हैं।

स्वामी विवेकानंद और उनके नारी-विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के उन महान चिंतकों और समाज-सुधारकों में हैं जिनका चिंतन केवल अपने युग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आज के वैश्विक और समकालीन समाज के लिए भी समान रूप से प्रासंगिक है। उनके विचारों का केंद्रीय उद्देश्य मानव गरिमा, समानता और आत्मबोध की स्थापना था। इस व्यापक मानवतावादी दर्शन में नारी को उन्होंने एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया। विवेकानंद के लिए नारी केवल समाज की एक इकाई नहीं, बल्कि संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्र की आत्मा थी। उनका यह विश्वास था कि किसी भी समाज की वास्तविक उन्नति का मूल्यांकन वहाँ की स्त्रियों की स्थिति से किया जा सकता है। यह विचार आज भी उतना ही सार्थक है, जब दुनिया भर में महिला अधिकार, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय पर व्यापक विमर्श हो रहा है। स्वामी विवेकानंद नारी और पुरुष के बीच किसी प्रकार की आत्मिक या बौद्धिक असमानता को स्वीकार नहीं करते थे। वे बार-बार इस बात पर बल देते थे कि आत्मा न तो स्त्री है और न ही पुरुष; आत्मा शुद्ध, निर्लिप्त और सर्वव्यापी है। समाज द्वारा निर्मित कृत्रिम भेदों ने नारी को कमजोर और पराधीन बना दिया है, जबकि वास्तविकता यह है कि नारी में अपार शक्ति और संभावनाएँ निहित हैं। समकालीन संदर्भ में यह विचार विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि आज भी अनेक समाजों में स्त्रियों को जैविक या सामाजिक आधार पर कमतर आँका जाता है। विवेकानंद का दर्शन इस मानसिकता को जड़ से चुनौती देता है।

भारतीय परंपरा के संदर्भ में विवेकानंद नारी की गरिमा को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान करते हैं। वे वैदिक काल की गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा और अपाला जैसी विदुषी महिलाओं का उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय संस्कृति में नारी को ज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिक साधना में समान अधिकार प्राप्त थे। उनके अनुसार नारी की अवनति भारतीय संस्कृति की मूल प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह ऐतिहासिक परिस्थितियों, सामाजिक असुरक्षा और रूढ़िवादी सोच का परिणाम है। आज के समय में, जब भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन खोजने का प्रयास कर रहा है, विवेकानंद का यह दृष्टिकोण अत्यंत मार्गदर्शक सिद्ध होता है। नारी-शिक्षा विवेकानंद के चिंतन का मूल स्तंभ है। उनका दृढ़ मत था कि जब तक महिलाओं को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिलेगी, तब तक समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। वे केवल साक्षरता नहीं, बल्कि ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो स्त्री को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और चरित्रवान बनाए। उनका प्रसिद्ध कथन—"स्त्रियों को शिक्षित करो, वे स्वयं अपने लिए मार्ग खोज लेंगी"—आज भी शिक्षा नीति और महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों का आधार बन सकता है। समकालीन भारत में जहाँ महिला शिक्षा में वृद्धि हुई है, वहीं गुणवत्ता, अवसर और सुरक्षा की चुनौतियाँ बनी हुई हैं; ऐसे में विवेकानंद की शिक्षा-दृष्टि आज भी प्रासंगिक और प्रेरक है।

स्वामी विवेकानंद नारी को केवल सहनशीलता और करुणा की प्रतीक मानकर सीमित नहीं करते, बल्कि उसे 'शक्ति' का जीवंत स्वरूप मानते हैं। भारतीय दर्शन में शक्ति की अवधारणा को वे अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। उनके अनुसार जिस समाज में नारी का सम्मान नहीं होता, वहाँ शक्ति-पूजा केवल एक दिखावा बनकर रह जाती है। आज के समय में, जब धार्मिक आडंबर और सामाजिक असमानता एक साथ दिखाई देती हैं, विवेकानंद का यह कथन हमें आत्मविश्लेषण के लिए बाध्य करता है। नारी के प्रति सम्मान केवल धार्मिक अनुष्ठानों से नहीं, बल्कि उसके अधिकारों और स्वतंत्रता की वास्तविक स्वीकृति से प्रकट होना चाहिए। समाज-सुधार के क्षेत्र में विवेकानंद के नारी-विचार अत्यंत व्यावहारिक और दूरदर्शी थे। वे बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, विधवा-दुर्दशा और स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता जैसी कुप्रथाओं के विरोधी थे। उनका मानना था कि नारी की मुक्ति दया या सहानुभूति से नहीं, बल्कि अवसर, शिक्षा और आत्मनिर्भरता से होगी।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में यह विचार विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज भी कई कल्याणकारी योजनाएँ स्त्रियों को केवल लाभार्थी के रूप में देखती हैं, निर्णय-निर्माता के रूप में नहीं। विवेकानंद का दर्शन स्त्री को सक्रिय सहभागी बनाने की प्रेरणा देता है।

विवेकानंद पुरुषों की भूमिका को भी नारी-सशक्तिकरण के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। उनका स्पष्ट मत था कि जब तक पुरुष अपनी मानसिकता में परिवर्तन नहीं लाएगा, तब तक स्त्री की स्थिति में वास्तविक सुधार संभव नहीं है। वे पुरुष-प्रधान सोच की आलोचना करते हुए कहते थे कि नारी को अधीन मानना स्वयं पुरुष की कमजोरी का संकेत है। आज के समय में, जब लैंगिक समानता की चर्चा केवल महिलाओं तक सीमित रह जाती है, विवेकानंद का यह विचार अत्यंत समकालीन प्रतीत होता है, क्योंकि यह परिवर्तन की जिम्मेदारी पूरे समाज पर डालता है। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में नारी की भूमिका पर विवेकानंद का चिंतन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे मानते थे कि कोई भी राष्ट्र तब तक सशक्त नहीं बन सकता, जब तक उसकी आधी आबादी अशिक्षित, अस्वस्थ और उपेक्षित बनी रहे। उनके अनुसार नारी में नैतिकता, त्याग और संगठन की अद्‌वितीय क्षमता है, जो राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में अनिवार्य है। आज जब महिलाएँ राजनीति, प्रशासन, विज्ञान, खेल और अंतरिक्ष तक में अपनी क्षमता सिद्‌ध कर रही हैं, विवेकानंद का यह विश्वास सत्य सिद्‌ध होता दिखाई देता है। विवेकानंद का नारी-विमर्श आधुनिक नारीवाद से कई दृष्टियों से भिन्न है। उनका नारीवाद संघर्ष और टकराव पर आधारित नहीं, बल्कि सहयोग, संतुलन और समरसता पर आधारित है। वे स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे का विरोधी नहीं, बल्कि पूरक मानते हैं। समकालीन समाज में, जहाँ लैंगिक विमर्श कई बार टकराव की दिशा ले लेता है, विवेकानंद का यह संतुलित दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक और समाधानकारी प्रतीत होता है। समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विवेकानंद के नारी-विचार मानवाधिकार और लैंगिक समानता की अवधारणाओं से मेल खाते हैं। आज संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ महिला सशक्तिकरण को सतत विकास का अनिवार्य घटक मानती हैं। विवेकानंद ने यह बात एक सदी पहले ही कह दी थी कि स्त्रियों के बिना समाज अधूरा और कमजोर है। इस दृष्टि से वे अपने समय से कहीं आगे के विचारक थे।

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद के नारी-विचार न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि आज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने नारी को सम्मान, शिक्षा और स्वतंत्रता का अधिकार देकर समाज को सशक्त बनाने का मार्ग दिखाया। उनका चिंतन हमें यह सिखाता है कि नारी का उत्थान किसी एक वर्ग का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता का उत्थान है। समकालीन समाज यदि विवेकानंद के इन विचारों को आत्मसात कर ले, तो लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय का स्वप्न साकार हो सकता है। यह कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद का नारीसंबंधी चिंतन व्यापक-, गहन और कालातीत है। उन्होंने नारी को न तो केवल परंपरा की बेड़ी में बाँधा और न ही आधुनिकता की अंधी दौड़ में खोने दिया, बल्कि उसे भारतीय संस्कृति की जड़ों से जोड़ते हुए आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने का मार्ग दिखाया। नारी के बिना समाज अधूरा है—यह विचार विवेकानंद के दर्शन का मूल है। उनके विचार आज भी हमें यह सिखाते हैं कि नारी का सम्मान और उत्थान ही सच्चे अर्थों में राष्ट्र और मानवता का उत्थान है। कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद के नारी-विचार आज भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं। शिक्षा, आत्मिक समानता, शक्ति, आत्मनिर्भरता और सम्मान पर आधारित उनका दर्शन वर्तमान समाज की जटिल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। यदि आज का समाज विवेकानंद के नारी-दर्शन को व्यवहार में उतार सके, तो न केवल नारी-सशक्तिकरण बल्कि संपूर्ण राष्ट्र और मानवता का उत्थान संभव है।

संदर्भ (References)

1. विवेकानंद, स्वामी. विवेकानंद साहित्य (खंड 4, 5 एवं 7). रामकृष्ण मठ, नागपुर।
2. Vivekananda, Swami. The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol. 5 & 7. Advaita Ashrama, Kolkata.
3. शर्मा, रामकृष्ण. स्वामी विवेकानंद और नारी जागरण. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. चतुर्वेदी, रमेश. भारतीय समाज सुधार आंदोलन और विवेकानंद. साहित्य भवन, प्रयागराज।
5. Das, Shashibhusan. Vivekananda and Indian Culture. Ramakrishna Mission Institute of Culture, Kolkata.
6. Sen, Amartya. Development as Freedom. Oxford University Press.
7. विवेकानंद, स्वामी. विवेकानंद साहित्य (खंड 4 एवं 5). रामकृष्ण मठ, नागपुर।
8. Vivekananda, Swami. The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol. 5 & 7. Advaita Ashrama, Kolkata.
9. शर्मा, रामकृष्ण. स्वामी विवेकानंद और नारी जागरण. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. चतुर्वेदी, रमेश. भारतीय समाज सुधार आंदोलन और विवेकानंद. साहित्य भवन, प्रयागराज।
11. दास, शशिभूषण .Vivekananda and Indian Culture. Ramakrishna Mission Institute of Culture, Kolkata.